मोरंगे

जनवरी–फरवरी 2019

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 पहचान

उड़ान

9 शेर और आदमी

10 राजा का बेटा

ज्ञान विज्ञान

11 हवा कहाँ–कहाँ होती है

जोड़–तोड़

13 उल्टे अंक

कलाकारी

15 स्वयं से

17 **माथापच्ची**
हीहीही–ठीठीठी

18 **कुछ हमने बढ़ायी,**
कुछ तुम बढ़ाओ

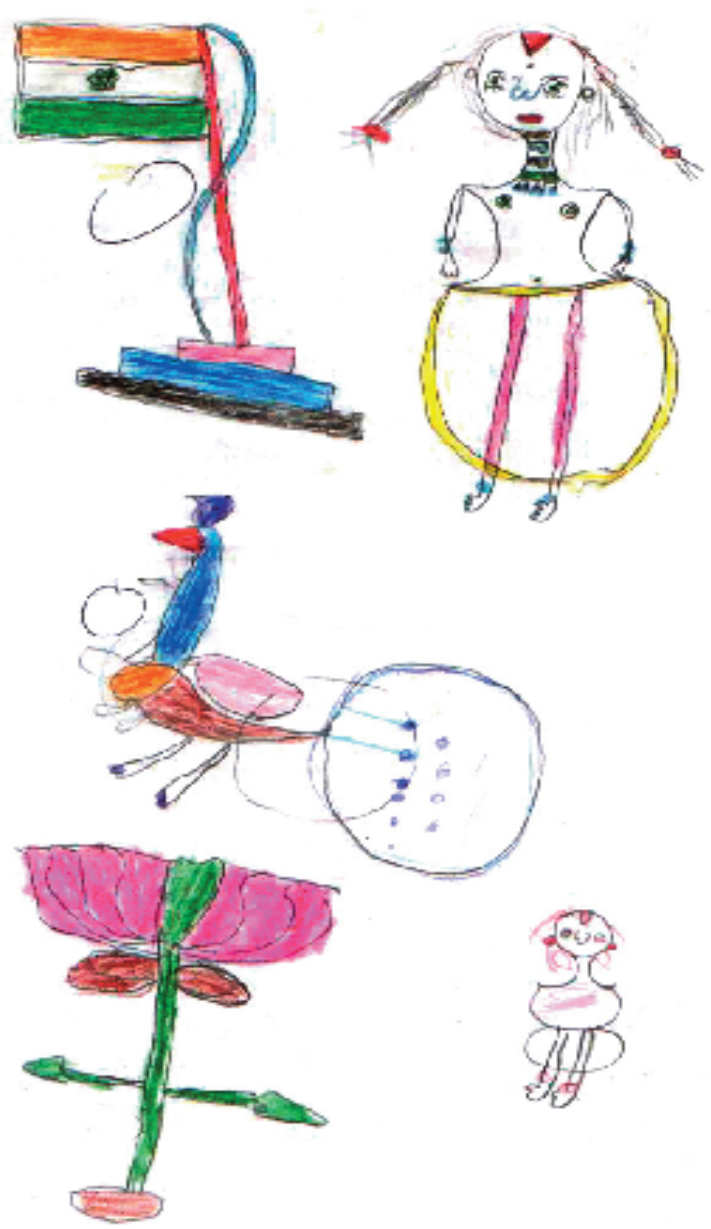

चेतनवीर गुर्जर, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, गोपालपुरा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जगदीश प्रसाद सैनी
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – नेहा, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम
वर्ष 9 अंक 103–104

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और

सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

महेन्द्र नायक, उम्र–9 वर्ष, समूह–हरियाली

पहचान

''गुरूजी ये सडन डेथ किसे कहते हैं?'' कुछ समझ नहीं आने पर रिंकू ने अपने गुरूजी के पास आकर पूछा।

''जब कोई निर्णय खेल मैदान पर खेलते हुए नहीं निकले तो श्रेष्ठ टीम तय करने के लिए अपनाये जाने वाले अन्तिम तरीके को सडन डेथ कहते हैं।'' गुरूजी जानते थे कि रिंकू को यह बात समझ नहीं आएगी। फिर भी उन्होने उसे जवाब दिया।

उन्होंने आगे कहा, ''रिंकू, जब कोई टीम सडन–डेथ तक खेल को ले जाती है तो ये समझ लों कि खेलने और देखने वालों की सांसे अटक जाती हैं। खेल को यहाँ तक ले आने का मतलब है, एक जबरदस्त मुकाबला, जिसमें दोनों टीमें अपनी पूरी ताकत झोंक देती हैं पर हार नहीं मानती। टीम के हर खिलाड़ी को अपना हुनर दिखाने का पूरा मौका मिलता है। टीम का हर खिलाड़ी क्षमता, कौषल और धैर्य की कड़ी चुनौती का सामना करता हैं। तभी टीम यहाँ तक पहुँचती है।'' गुरूजी रिंकू को बताते–बताते कहीं खो से गये...

पुलिस लाईन के खेल मैदान पर भीड़ का तांता लगा हुआ था। माहौल को देखते ही समझ सकते थे कि यहाँ कोई टूर्नामेंट हो रहा है। जी हॉ! यहां जिला स्तरीय

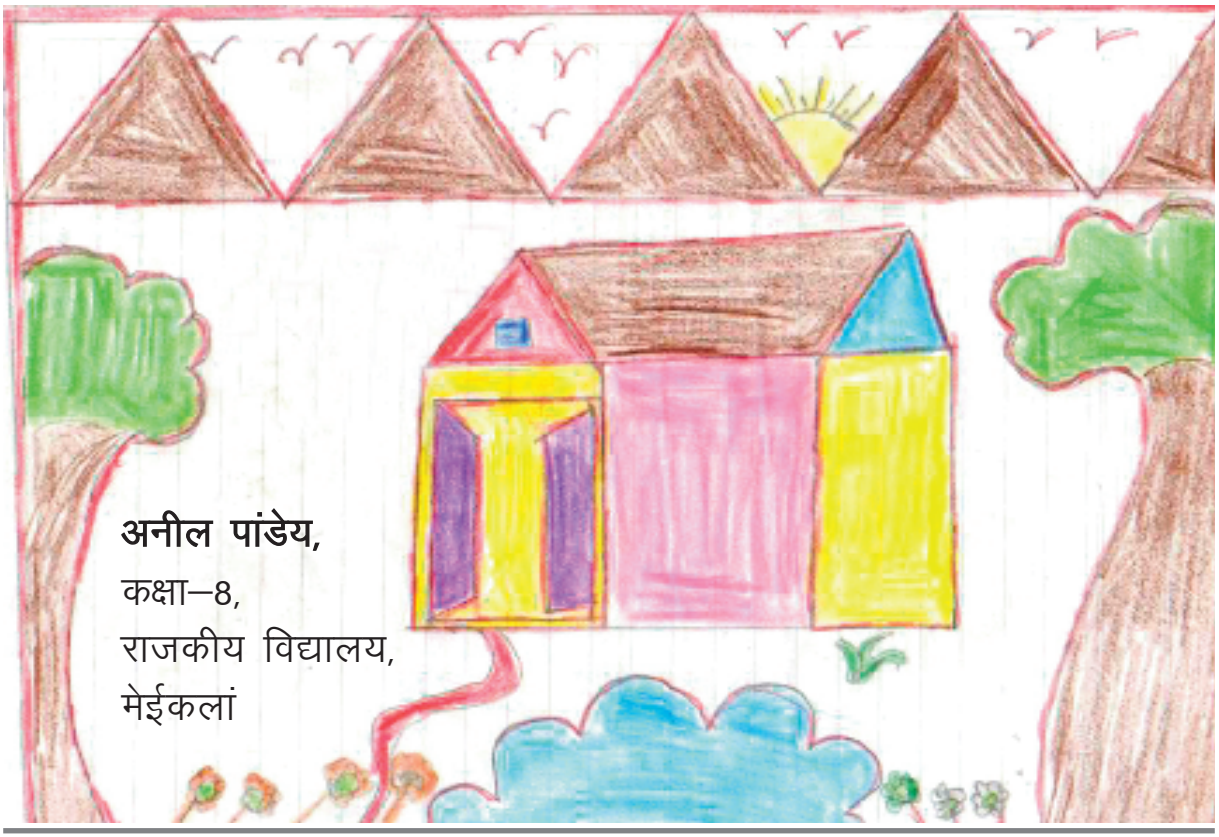

अनील पांडेय,
कक्षा–8,
राजकीय विद्यालय,
मेईकलां

फुटबॉल प्रतियोगिता के नॉक–आऊट मैंच खेले जा रहे थे। मुकाबला उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया और सेन्टपॉल स्कूल के बीच होने वाला था। सभी दर्शक अपनी–अपनी पसन्द की जगह बैठ चुके थे।

सेन्टपॉल स्कूल शहर की प्रसिद्ध स्कूलों में से थी। जहाँ साधन सम्पन्न और प्रभावशाली लोगों के बच्चे पढ़ते हैं। किसी ने बताया कि इस स्कूल के पास खेल के पॉच–पॉच कोच हैं। दूसरी तरफ उदय सामुदायिक पाठशाला की टीम थी। जिसकी आज से पहले कोई पहचान नहीं थी। यह टीम पहली बार फुटबॉल प्रतियो. गिता में भाग ले रही थी। इस टीम के बच्चे एक ऐसी जगह से आये थे जहाँ आज भी स्कूल जाना समय की बरबादी करना समझा जाता है। यहाँ बालश्रम का उपयोग घरेलू और कृषि संबंधी कामों में किया जाता हैं। कुछ बच्चे तो घुमन्तु परिवारों से आते हैं, जो सारंगी बजाते हुए गीत कहानी सुनाकर पैसा कमाते हैं। आपने इन्हे रेल और बसों में जरूर देखा होगा।

रैफरी की विसिल बजते ही दोनों टीमें लाईन अप हो गई। टीम कोच और कैप्टन ने बारी बारी से टीम का परिचय दिया। टीम कोच और मुख्य अतिथि के मैदान से बाहर आते ही खेल शुरू हो गया। सभी का कहना था कि, ''सेन्टपॉल टीम उदय फरिया को बुरी तरह से हराएगी।''

मैदान पर तो कुछ और ही हो रहा था। सेंटपॉल की टीम गोल करना तो दूर गोल बचाने के लिए पसीना बहा रही थी। टीम के कोच टेंशन में इधर–उधर भाग रहे थे और अपनी टीम पर अच्छा खेलने के लिए चिल्ला रहे थे। हाफ टाईम तक कोई भी टीम गोल मारने में सफल नहीं हो सकी।

सेंटपॉल टीम के कोच प्लेयर्स को डॉट रहे थे। उन्होने अब मैच को टाई ब्रेकर में ले जाने की रणनीति बनाते हुए रक्षा पंक्ति को और मजबूत कर दिया। उदय फरिया टीम कोच अब तक के प्रदर्षन से खुश थे और चाहते थे मैच टाई ब्रेकर में नहीं जाये।

मुख्य अतिथि ने उदय फरिया टीम के प्रदर्शन से प्रभावित होकर टीम के विषय में जानकारी मांगते हुए टीम प्रभारी से पूछा, ''माटसाहब ये उदय सामुदायिक पाठषाला क्या है? पहले कभी नहीं सुना।''

''सर, एक समाजसेवी संस्था है 'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र', जो इन पिछड़े और वंचित बच्चों के लिए उदय सामुदायिक पाठशाला के नाम से निःशुल्क स्कूल चलाती है। ये संस्था के ही प्रयास हैं वरना इन बच्चों के भाग्य में कहाँ खेलना लिखा है। साहब, उदय स्कूल की हालत भी बच्चों की तरह ही है। बस, आप जैसे लोगों की मदद से जैसे–तैसे चल रही है।''

विसिल बजते ही दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने अपनी–अपनी पोजिशन ले ली। अगली विसिल बजते ही खेल फिर शुरू हो गया। सेंटपॉल स्कूल की प्रतिष्ठा खतरे में थी। अब दर्शक उदय फरिया के लिए हुटिंग कर रहे थे। फरिया टीम के हमले बढ़ते जा रहे थे। गोल किसी भी समय हो सकता था। लेकिन खेल के अन्तिम मिनट तक भी गोल नहीं हुआ।

एक लंबी विसिल के साथ दूसरा हाफ समाप्त हो गया। मैच रैफरी ने टाई ब्रेकर का इशारा किया। उदय फरिया टीम द्वारा अतिरिक्त समय दिये जाने की मांग ठुकरा दी गई। सेन्टपॉल टीम अपनी रणनीति में कामयाब रही। दोनों टीमों से पॉच–पॉच प्लेयर का नाम पैनल्टी शूट के लिए लिखा गया। उदय टीम को पैनल्टी शूट आऊट

सचिन मीना, कक्षा–8, उदय पाठशाला, जगनपुरा

का विशेष अनुभव नहीं था। यह बात सेंटपॉल टीम के कोच भी जानते थे। अब मैंच सेंटपॉल के पक्ष में जाता दिखाई दे रहा था।

उदय टीम के कोच ने गोलकीपर चेंज किया और उसके कान में कुछ जरूरी बातें बताई। टॉस जीतने के बाद सेंटपॉल ने पहले गोल मारने का निर्णय लिया। उदय टीम का गोलकीपर लाईन पर पहुँच गया। सभी की सांसे थमी हुई। रेफरी ने शॉट मारने के लिए विसिल बजाई।

सेंटपॉल के शूटर ने बिना किसी गलती के बॉल गोल में मार दी। उदय फरिया की बॉल रोक ली गई। दूसरे शॉट में दोनों टीमों ने बॉल को नेट में डाल दिया। उदय टीम 2:1 से पिछड़ रही थी। तीसरे शॉट से पहले उदय टीम कोच गोलकीपर के पास गया।

''सोनू! तुम शॉट लगने से पहले ही एक तरफ चले जाते हो। अपनी जगह पर आराम से खड़े रहो। अब बहुत तेज शॉट नहीं आयेंगे। इसलिए बॉल देखकर ही रोकने के लिए जाओ।'' उदय टीम कोच ने अपने गोलकीपर को समझाया।

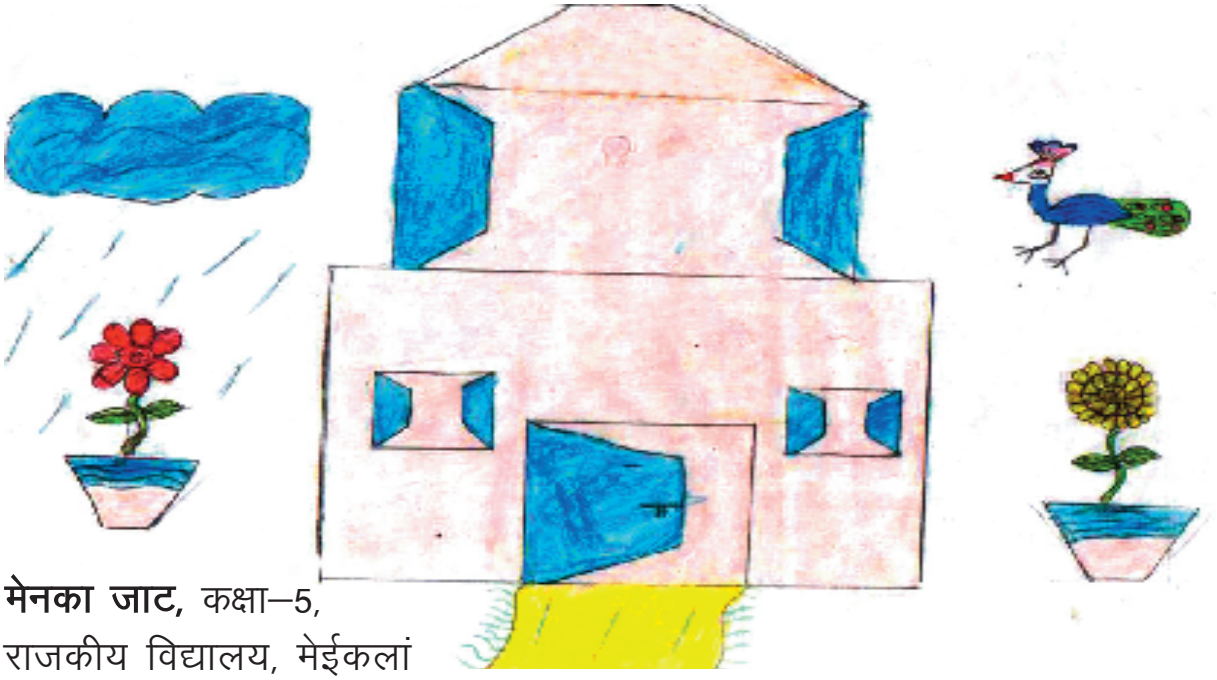

मेनका जाट, कक्षा–5,
राजकीय विद्यालय, मेईकलां

सलाह काम कर गई और गोली ने तीसरा शॉट रोक लिया। वहीं उदय प्लेयर ने बॉल नेट में डाल दी। जोश और उत्तेजना अपने चरम पर थी। दोनों टीमें 2:2 की बराबरी पर थी। सेंटपॉल टीम कोच की रणनीति फेल होती दिखाई दे रही थी।

चौथे और पॉचवे शॉट में दोनों टीम बॉल को नेट में डालने में कामयाब रही। पैनल्टी शूट आऊट में दोनों टीमें 4:4 की बराबरी पर थी। अगले सेमी फाइनल में जाने के लिए एक टीम को बाहर होना जरूरी था। मैच रेफरी ने सडन डेथ में जाने का इशारा किया। दोनों टीमें अपने बेस्ट प्लेयर्स को आजमा चुकी थी।

''एक गलट शॉट टीम को बाहर कर सकता है'' सेंटपॉल टीम के कोच ने कहा।

सारा मामला भाग्य पर निर्भर था। दोनों टीमों के पास विश्वसनीय शूटर नहीं था। सेंटपॉल के प्लेयर का शॉट नेट में गया। कोच और टीम ने राहत की सांस ली। उदय टीम के शूटर को बॉल नेट में डालना जरूरी हो गया। गोली को बचाने के प्रयास में शॉट पोल के बाहर मार दिया।

सेंटपॉल टीम और कोच एक दूसरे को बधाई दे रहे थे। उनकी टीम सेमी फा. ईनल में पहुँच गई। दर्शकों ने उदय टीम के शानदार खेल के लिए जमकर तालियाँ बजाई। उदय कोच ने टीम को अच्छे खेल के लिए बधाई दी। उदय फरिया टीम अब लोगों के लिए जानी पहचानी टीम बन चुकी थी।

गुरूजी ने अपना चश्मा साफ करते हुए पूछा, ''तो रिंकू! अब तुम समझ गये ना, सडन डेथ क्या होता है?'' रिंकू ने बिना कुछ बोले गर्दन हिलाकर जवाब दिया और फुटबॉल उठाकर मैदान की तरफ चला गया।

विष्णु गोपाल

उड़ान

शेर और आदमी

मुस्कान मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

एक बार जंगल का राजा शेर बहुत दिनों से भूखा था, क्योंकि उसके जंगल में उसके खाने लायक कुछ बचा ही नहीं था। जिसको कि वह खा सके। एक दिन एक आदमी उस जंगल से गुजर रहा था। शेर को उस आदमी की खुशबू आ गई। शेर जल्दी से उस आदमी के पास पहुँच गया। शेर को देखकर वह आदमी भागने लगा और कहने लगा कि, ''मुझे माफ कर दो, मुझे मत खाओ।'' शेर बोला, ''मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ, मैं तुम्हें खाकर अपनी भूख मिटाऊंगा।'' आदमी बोला कि ''मुझे छोड़ दो, अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हारे खाने के लिए बड़ा भारी–भरकम व्यक्ति लेकर आऊँगा।'' शेर ने उसे छोड़ दिया। आदमी अपने घर चला गया और फिर वापस ही नहीं आया। शेर सुबह से शाम तक उसका इन्तजार करता ही रहा परन्तु वह वापस ही नहीं आया। शेर समझ गया कि उस आदमी ने मुझे लालच के जाल में फँसाकर पागल बनाया है।

वन्दना, उम्र–8 वर्ष, समूह–बरगद

राजा का बेटा

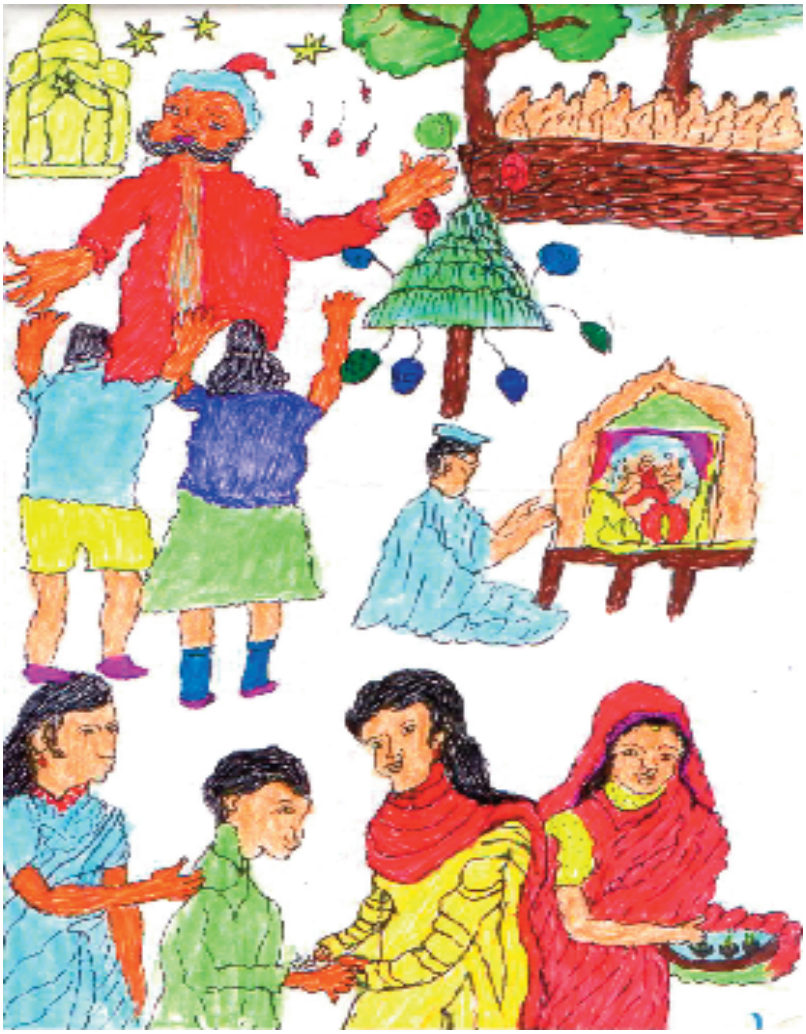

चायना सैनी, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय, अल्लापुर

एक बार की बात है। एक आदिमानव का बच्चा कहीं गुम हो गया। वहाँ पर एक शेर आया। शेर उस बच्चे को देखकर वहाँ रूक गया। शेर ने कहा, ''भईया, तुम क्यों रो रहे हो?'' बच्चे ने कहा, ''मैं अपने परिवार से अलग हो गया हूँ।'' शेर ने बच्चे से पूछा, ''आपका नाम क्या है?'' बच्चे ने बताया, ''शुभम, मेरे एक बहिन और दो भाई और हैं, मुझे उनकी बहुत याद आ रही है।'' शेर शुभम को अपने साथ अपने राज्य में ले जाता है। वहाँ अपनी प्रजा से मिलाता है और कहता है कि ये सब जानवर तुम्हारे दोस्त हैं और तुम्हारा ध्यान रखेंगे। शेर जानवरों से कहता है कि, ''हमें इसके परिवार को ढूंढने में इसकी मदद करनी है, यह अपने परिवार से बिछुड़ गया है।'' शेर बच्चे को अपनी गुफा में ले जाता है और उसे भोजन खिलाता है। थोड़ी ही देर बाद वहाँ एक हाथी आता है और शेर से कहता है कि, ''महाराज इस बच्चे के माता–पिता मिल गये हैं।'' शेर, बच्चा और हाथी तीनों उस बच्चे के माता–पिता के पास चल देते हैं। बच्चा अपने माता–पिता को मिल जाता है। बच्चे का पिता भी एक जंगल का राजा है। शेर को जब यह बात पता चलती है तो वह शुभम से कहता है कि ''तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम्हारे पिता एक राजा हैं। शुभम ने कहा कि ''तुमने मुझे बोलने का समय ही नहीं दिया इसलिए मैं बोल नहीं पाया।'' फिर शुभम और शेर दोनों दोस्त बन जाते हैं। शेर वापस अपनी गुफा में आ जाता है।

राहुल दीक्षित, उम्र–11 वर्ष, समूह–खेजड़ी

हवा कहाँ-कहाँ होती है?

हेमन्त, उम्र–10 वर्ष,
समूह–सागर

आज बच्चों से हवा पर चर्चा की शुरूआत एक सवाल से हुई, ''ऐसा क्या है जो इस कमरे में है पर हम देख नहीं सकते?''

बच्चों ने जवाब दिए, ''हमारे अन्दर के अंग जैसे दिल और फेफड़े। हम इन्हे और खुद को नहीं देख सकते, पर हम हैं।''

इस पर मैनें कहा, ''दूसरे तुम्हें देखकर बता सकते हैं कि तुम हो।''

थोड़ा वक्त गुजरने के बाद अंश (8 वर्ष) और अंकित (9 वर्ष) ने कहा, ''सर वो हवा है।'' अंश का ज्यादा जोर ऑक्सीजन और कार्बन डाईऑक्साइड पर था।

मैने पूछा, ''तुम्हें कैसे पता चला या तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि इस कमरे में हवा है?''

अंश ने कहा, ''हमें विज्ञान विषय पढ़ाने वाली मैड़म ने बताया था।''

फिर मैंने पूछा, ''अगर ऐसा है तो क्या हवा हर जगह है?'' सभी बच्चों ने एक साथ कहा, ''हाँ।''

मैनें उन्हें कुछ सामान (कप, बोतल, बिना ढक्कन की बोतल, प्लास्टिक मग) दिखाते हुए पूछा, ''क्या इन सभी चीजों में हवा है?''

उनके जवाब मिले जुले थे। केवल देवेंद्र (10 वर्ष) को लगता था कि सभी चीजों में हवा है। बाकी बच्चों को लगता था कि कुछ चीजों में हवा नहीं है।

आशीष, गोपाल (10 साल), अंश (8 वर्ष) और रोशनी (9 वर्ष) का जवाब था–

- बन्द बोतल में हवा है जबकि बिना ढक्कन की बोतल में से हवा निकल चुकी है।

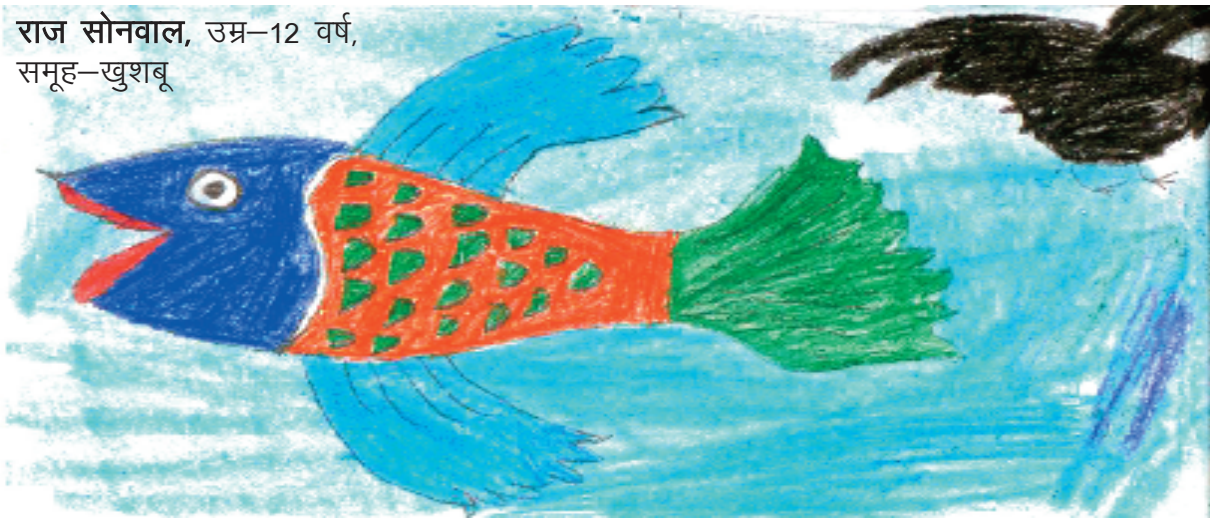
राज सोनवाल, उम्र–12 वर्ष,
समूह–खुशबू

- मग में हवा नहीं है क्योंकि उसका मुँह खुला है।
- जिस कप में से चाय पी चुके हैं या खाली कप में हवा नहीं है।

मैनें सभी बच्चों से कहा, ''आप को जो भी लगता है, अपनी कॉपी में लिख लें और क्लास के अन्त में अगर अपनी राय में बदलाव आते हैं तो बताना।''

गतिविधि की शुरूआत हमने एक पानी से भरी बोतल से की। मैने बच्चों को बोतल देकर, उसे दबाकर देखने के लिए कहा। बच्चों ने कहा, ''बोतल पूरी तरह से नहीं दबती।'' मैंने पूछा, ''ऐसा क्यों होता है? बच्चों का जवाब था, ''क्यों कि उसमें पानी भरा है इसलिए वो नहीं दबती।''

तब मैंने कहा, ''अब बोतल का पानी निकालकर, ''ढक्कन लगाकर बोतल को दबाकर देखो।'' बच्चों ने पाया कि अभी भी बोतल पूरी तरह से नहीं दबती है। मैंने पूछा, ''ऐसा क्यों हुआ?'' बच्चों ने कहा, ''क्यों कि उसमें हवा है।''

फिर मैंने बोतल का ढक्कन खोल दिया और पूछा, ''अब आपको क्या लगता है, इसमें हवा है या नहीं?''

ज्यादातर बच्चों ने कहा कि इसमें हवा नहीं है। मैंने कहा, ''फिर तो कप में और मग में भी हवा नहीं होगी।'' बच्चों ने एक साथ कहा, ''हाँ।''

मैंने बच्चों से कहा, ''आप सभी अपने मुँह से अपने हाथ, पर फूँक मारें। अब आपने क्या महसूस किया?''

बच्चों ने कहा, ''हमने हवा महसूस की।'' फिर मैंने बिना ढक्कन की बोतल देते हुए कहा, ''इसका मुँह अपने गाल के पास ले जाकर दबाओ।'' ऐसा करने पर बच्चों ने पाया कि गाल पर हवा महसूस होती है। अब बच्चों का जवाब था, ''बोतल में हवा है।'' मैंने पूछा, ''अब इस कप और मग के बारे में आपका क्या ख्याल है?'' बच्चों ने कहा, ''इसमें भी हवा होगी।''

स्रोत – अंकित, शैक्षणिक सन्दर्भ

उल्टे अंक

कक्षा एक में आने वाले अधिकांश बच्चों के साथ गणित में जो पहला काम शिक्षक द्वारा करवाया जाता है वह अंक पहचान का होता है। पर बच्चे का स्कूल में ये पहला साल है तो फिर उसे इसके पहले बहुत सारे काम करवाने की जरूरत होती है। पर देखा यह जाता है कि बच्चे जब लिखने की शुरूआत करते हैं तो सब कुछ गोल–गोल ही बनाते हैं। गणित में भी यही होता है। पर जब उसके साथ जमीन पर, मिट्टी के साथ, स्लेट पर, बोर्ड पर, कॉपी में अंक बनाने और उनको पहचानने का काम किया जाता है तो उनकी गोलाकार आकृतियाँ अंको का रूप लेने लगती हैं। अब उनकी आकृतियों को शिक्षक भी पहचानने लगता है। अब तक बच्चे मौखिक रूप से सब ठीक बताने लगते हैं। पर लिखित में उनके अंक उल्टे लिखे होते हैं। उन्हें चाहे सीधा अंक दिखाओं या उल्टा वे उसे उल्टा ही बनाने लगते हैं। शिक्षक के बताने और बार–बार ध्यान दिलाने पर यह गलती भी सुधर जाती है। दो तीन बच्चे ऐसे रह जाते हैं जिनके साथ थोड़ा लम्बे समय तक काम करना होता है। इस पर अधिक समय देने से बच्चा दूसरी अवधारणाओं में पिछड़ने लगता हैं। जिसकी वजह से अभिभावक न सिर्फ बच्चे पर बिगड़ते है अपितु शिक्षक को भी जिम्मेदार ठहराने लगते हैं। शिक्षक यहाँ पर कुछ विशेष गतिविधियाँ करवाकर बच्चे की मदद कर सकता है। जैसे अंको पर उंगली फेरना, पेन्सिल चलाना, मिलती जुलती आकृतियों में से सही आकृति का मिलान करना। ज्यामितिय आकृतियाँ

सबीना सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–संगम

बनवाना। जैसे–जैसे बच्चे की अवलोकन क्षमता बढ़ती जाती हैं, वह आकृतियों के बींच के अन्तर को पहचानने लगता है। एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि बच्चे के सीखने की गति को इस की वजह से रोकना नहीं चाहिए, ना ही सब कुछ छोड़कर इसी काम के पीछे लगना चाहिए। बस सावचेत रहकर उक्त बच्चों को दिये जाने वाले काम और उनके साथ होने वाले संवाद पर काम करते रहना चाहिए। ये बच्चे उल्टा लिखने के अलावा जोड़ घटाव, आरोही अव. रोही, छोटा बड़ा, कम ज्यादा जैसे सभी काम सही करते हैं। इसलिए उसे अन्य बच्चों के साथ आगे बढ़ने का अवसर दें और काम करने दे। दूसरी कक्षा में आते–आते सभी बच्चे सही अंक बनाने लगते हैं। इस प्रकार इनकी यह समस्या भी आगे बढ़ जाती है, जो हमें दो अंको की संख्या में नजर आने लगती है। इस तरह के मामलों में शिक्षक और अभिभावकों को धैर्य से काम करते हुए बच्चे की मदद करनी चाहिए। उसके साथ की जाने वाली सामान्य गतिविधियों में बदलाव करना चाहिए। विभिन्न विषयों में किये जाने वाले कामों के साथ इस पर काम किया जाये। क्यों कि यह समस्या किसी एक विषय से संबंधित नहीं है। यदि इतने पर भी समस्या नहीं सुधरे तो डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए।

कालूराम मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

विष्णु गोपाल

स्वयं से

नेहा सोनवाल,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–खुशबू

एक बार दोपहर के समय, दो उज्ज्वल और खुश चेहरे मेरे पास आये और दिखाया कि उन्होंने मिट्टी के उपयोग के साथ एक मोबाईल फोन बनाया है। वे अपने हाथों में मिट्टी से बने इस फोन को पकड़े हुए थे। यहाँ तक कि जब उनकी यह वस्तु तैयार थी, तब भी वे उससे चिपके हुए थे। उसके निरीक्षण के लिए सतह पर अपनी अंगुलियों को उस पर बार–बार फेर रहे थे। फोन के कोने में छोटा छेद था जिसमें एक छोटा और टूटा काच लगा हुआ था। जब बच्चों द्वारा उसका उल्लेख किया गया तो पता चला कि वह कैमरा था। मोबाइल के बाहरी आकार को एक फूल के साथ सजाया गया था। वे मिट्टी के द्वारा बनाई गई इस वस्तु के साथ बहुतं खुश थे। जिस प्रक्रिया का सहारा लेकर उन्होंने इसे बनाया और इसके पीछे छिपे उद्देश्य को व्यक्त करने के लिए वे अधिक उत्साहित थे। जिस तरह से इन बच्चों ने कलाकृति बनाने में रोजमर्रा की सामग्री का उपयोग किया था, वह बहुत रोचक थी। कुछ समय बाद वे मेरे पास फिर आए और कहा कि उन्होंने एक कहानी बनाई है। कहानी एक बहन और एक भाई के बारे में थी, जो अलग–अलग स्थानों पर रह रहे थे और

फोन पर वार्तालाप कर रहे थे। वे बात कर रहे थे कि दिवाली छुट्टियों पर वे एक साथ और अलग–अलग क्या–क्या करेंगे।

खुशी गुर्जर, कक्षा–8, समूह–खुशबू

मुझे हमेशा से यह जानने में दिलचस्पी थी कि कैसे मिट्टी से बनी कला एक आवश्यक तत्व है। इसलिए मैंने गतिविधि की क्रियात्मक प्रकृति को बहुत बारीकी से देखा। जैसे ही बच्चों के लिए मिट्टी का समय होता है, वे तुरन्त मिट्टी को मोल्ड करना और आकार देना शुरू कर देते हैं। प्रत्येक बच्चा वस्तुओं को बनाने के लिए विचारों और जानकारी को इकट्ठा करने में शामिल होता है। जिसके परिणामस्वरूप एक सहकारी कार्य देखने को मिलता है। बच्चे मिट्टी का काम करते समय उसको नियंत्रण में लेते हैं। उसको चिकोटी देते हैं, मोड़ते हैं और रोल करते हैं और इनके माध्यम से अपने मोटर कौशल विकसित करते हैं। मैंने बच्चों को मिट्टी की सतह, उसका रंग और उसकी ध्वनि (जब वह गीली होती है) उसको भी जाँच करते हुए देखा है। मिट्टी बच्चे को गलतियों की मरम्मत करने की अनुमति देती है और उन्हें फिर से बनाने में वे डरते नहीं है। वे उसकी मरमत करते है और अपना बनाया टुकड़ा खुद ही सजाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि वे कुछ सीखते हैं जो बहुत महत्वपूर्ण है यानि वे एक कुम्हार के समान प्रयास करते हुए नजर आयेंगे। मुझे यकीन नहीं कि क्या हर बच्चा अपनी रचनाओं के लिए सौंदर्यबोध की भावना विकसित करता है या नहीं। लेकिन जिस प्रकार वे अपनी भावनाओं को ईमानदारी के साथ व्यक्त करते है यह बिना किसी आशंका के अभूतपूर्व है।

एकता धनकर, समन्वयक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति स.मा.

माथापच्ची

1. एक बड़, तीन सौ पैंसठ जड़, बारह डाल, तीन फल।

2. एक लड़के की उम्र 25 साल है, उसके पिताजी की उम्र 50 साल है, तो लड़का अपने पिताजी से कितने : छोटा है? और पिताजी लड़के से कितने : बड़े हैं?

3. 100 बच्चे एक गोले में खड़े हैं। नंबर 1 से 100 तक। एक नंबर के पास एक बॉल है, वो अपने से अगले (नंबर 2) को गिराकर बॉल उसके अगले (नंबर 3) को दे देता है। इसी प्रकार सभी अपने से अगले को गिराकर बॉल उसके अगले को देते रहते हैं। अगर लगातार ऐसे ही चलता रहे तो अन्त में कौन से नंबर के बच्चे को बॉल मिलेगी?

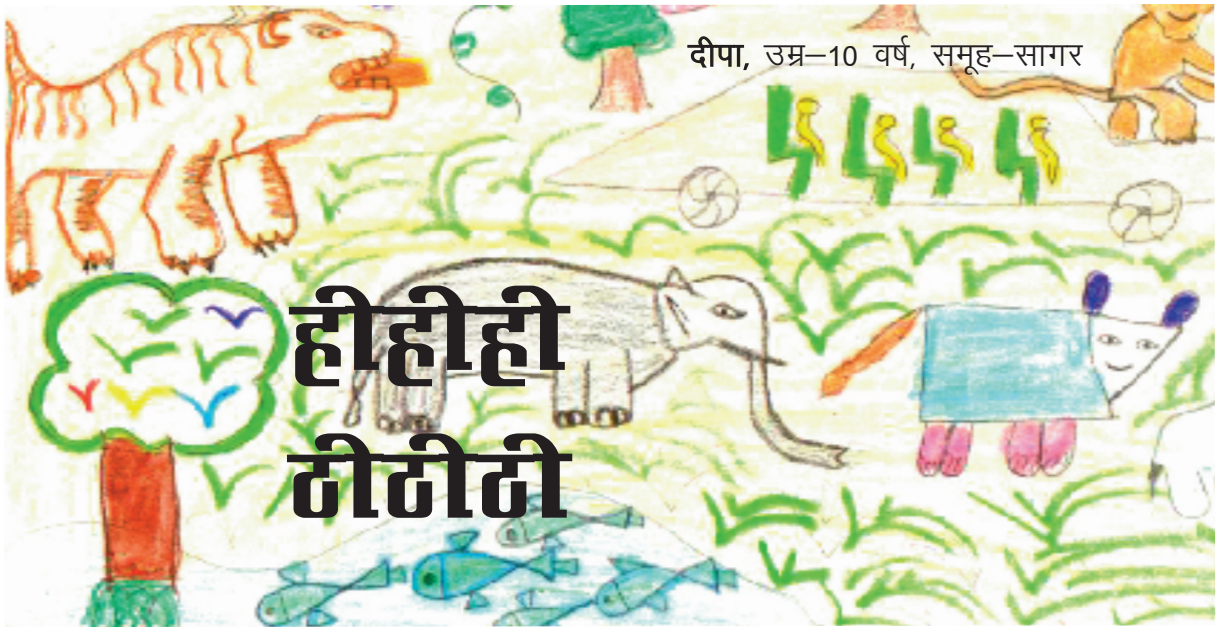

1. जंगल में एक हाथी जा रहा था। उसके पीछे दो चूहे आ रहे थे। एक चूहे ने दूसरे चूहे से कहा, ''इस हाथी से पुराना हिसाब चुकता करना है, बोलो तो मैं इसे लंगड़ी मारकर गिरा दूँ?'' दूसरा चूहा बोला, ''छोड़ रहने दे, हम दो हैं और वो अकेला। लोग क्या कहेंगे कि दो चूहों ने मिलकर बेचारे एक अकेले हाथी को गिरा दिया।''

हरिकेश बैरवा, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय सवाईगंज।

2. एक मरीज डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर से कहा कि, ''मेरे सपनों में क्रिकेट मैच आता है।'' डॉक्टर बोला, ''यह लो दवा, आज से शुरू करना।'' मरीज बोला, ''आज तो फाइनल मेच है, कल से ले लूंगा।''

सुरेन्द्र सैनी, समूह–उजाला, उम्र–11 वर्ष

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

आरती, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

एक खरगोश था। उसे भूख लग रही थी। वह एक खेत में गया तो उसे वहाँ गाजर मिली। वह गाजर बहुत मीठी थी। खरगोश वहीं गाजर खाने लग गया। वहीं खेत का मालिक बैठा था। वह मालिक बहुत खराब था। मालिक बोला, "तू बहुत छोटा है और मेरे खेत से चोरी करके गाजर खाता है?".....

सुमन प्रजापत, *कक्षा–4, उम्र–10 वर्ष, राज.प्राथ.विद्या. बोदल द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

सड़क बुहारती रै आई हवा।
पानी भरता रै आया बादल।

पवन गुर्जर, *समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

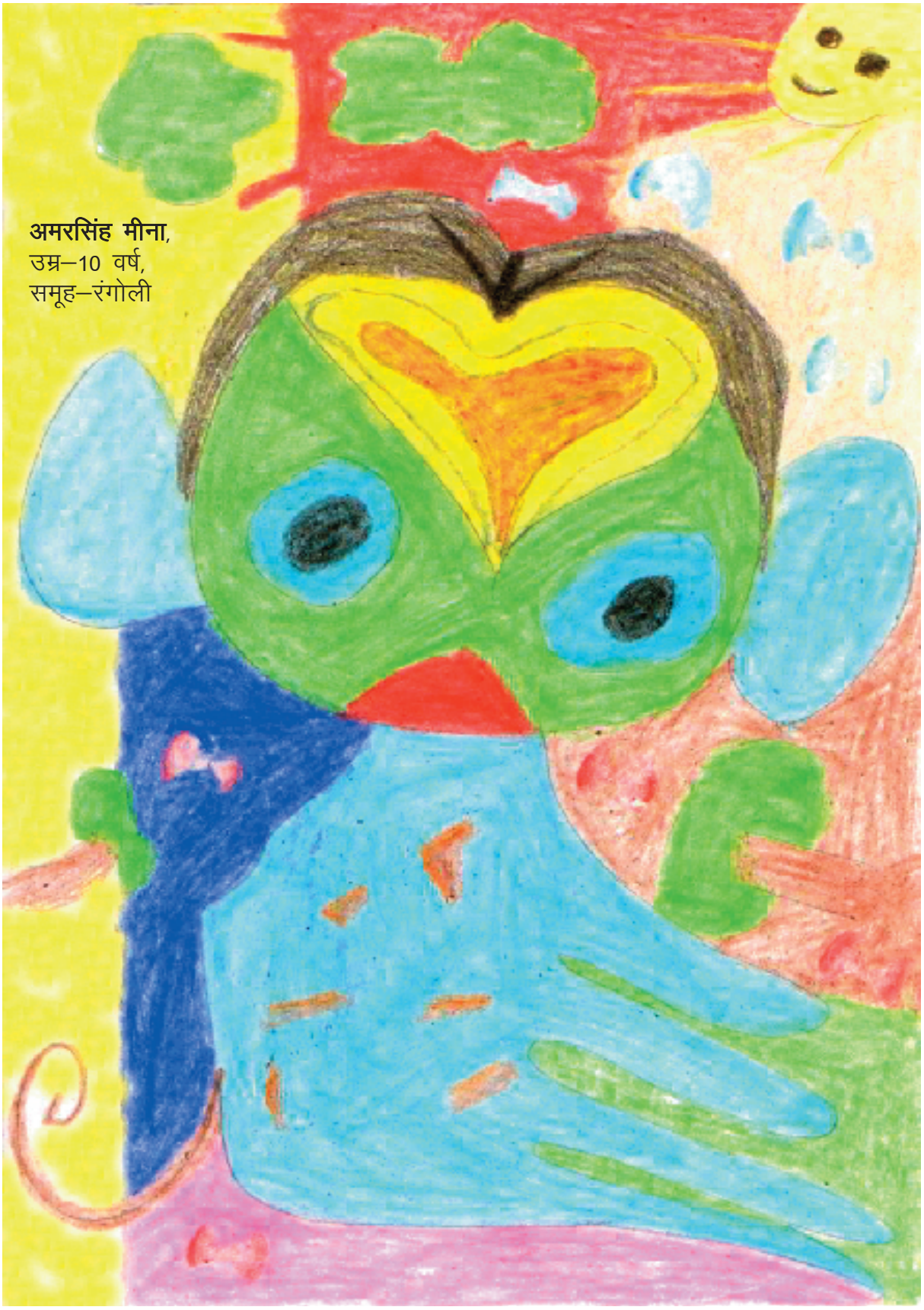

अमरसिंह मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रंगोली

पहेलियों के ज़वाब –

1. वर्ष 2. लड़का 50% छोटा है और पिताजी 100% बड़ा है 3. 73 नंबर का बच्चा

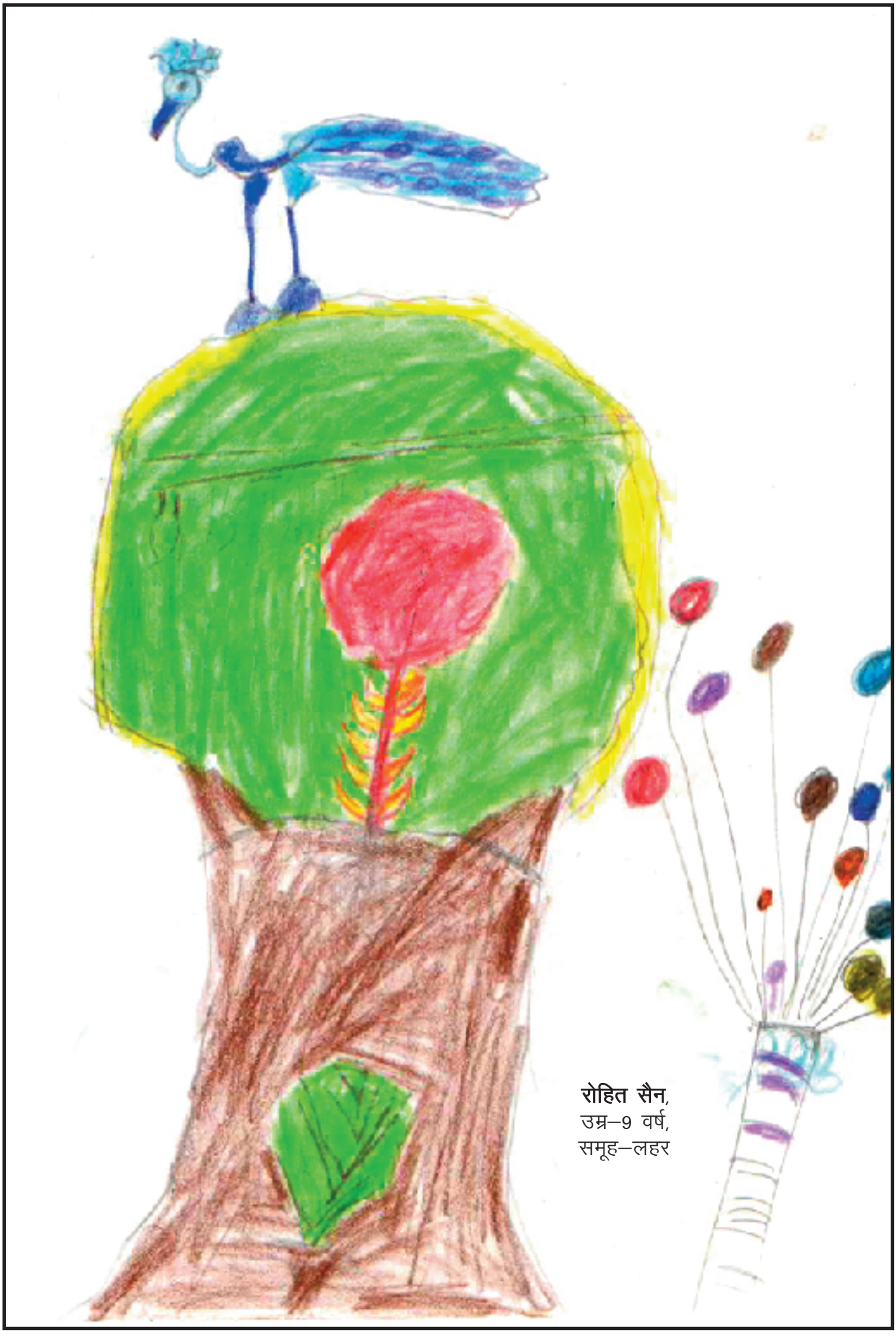

रोहित सैन,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–लहर